नमूना प्रश्न पत्र - 2 उत्तरमाला (2021-2022)

कक्षा - 10

विषय - हिन्दी (पाठ्यक्रम 'ब')

खण्ड 'क'

1. (क) चाय पीने के बाद लेखक ने महसूस किया कि उसके दिमाग की रफ्तार धीमी पडती जा रही हैं। थोड़ी देर में वह बिल्कुल बंद हो गई। उसे लगा मानो वह अनंतकाल में जी रहा है। उस समय उसके दिमाग से भूतकाल एवं भविष्यकाल दोनों उड़ गए। केवल वर्तमान काल अनंतकाल जैसा लंबा लगने लगा।

(ख) 'मनुष्यता' कविता में अभीष्ट मार्ग ऐसे मार्ग को कहा गया है, जिसके माध्यम से सभी व्यक्तियों की इच्छओं को पूरा किया जा सके तथा समस्त समाज का कल्याण किया जा सके, जो समस्त मानवजाति के हितकारी हो। कवि पाठकों को प्रेरित करते हुए कहता है कि अभीष्ट मार्ग पर संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए भी लक्ष्य पथ की और निरंतर अग्रसर रहना चाहिए।

(ग) 'कर चले हम फ़िदा' गीत में कवि ने सैनिकों के माध्यम से देश के लिए अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले लोगों की भावना को आलोकित किया गया है। देश की रक्षा में अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाला सैनिक ऐसी ही अपेक्षा आने वाली युवा पीढ़ियों से भी करता है। उसे देश के लिए 'मर-मिटना अपने जीवन में सौंदर्य तथा प्रेम की प्राप्ति से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण एवं अर्थपूर्ण लगता है। इसी में जीवन की सार्थकता है। देशभक्ति का उत्साह प्रवाहित करना ही कर 'चले हम फिदा' गीत का प्रतिपाद्य है।

2. (क) वज़ीर अली को पद से हटाकर बनारस पहुँचा दिया। बनारस रहने के तीन महीने बाद गवर्नर जनरल ने उसे कलकत्ता (कोलकाता) में बुलाया। वज़ीर अली को यह बात सहन नहीं हुई। वह इस बात की शिकायत करने वकील के पास गया, जो बनारस में ही रहता था। उसने वकील से कहा कि उसे गवर्नर जनरल ने कलकत्ता (कोलकाता) क्यूँ तलब किया है। वकील ने वज़ीर अली की शिकायत सुनकर उस पर कोई प्रतिक्रिया दिए बिना उसे बहुत बुरा-भला कहा। वज़ीर अली तो पहले से ही अंग्रेजों से नफ़रत करता था। वकील की बातें सुनकर उसका क्रोध बढ़ गया। उसने खंजर निकाल कर वकील की हत्या कर दी।

अथवा

(ख) 'मनुष्यता' कविता में सहानुभूति अर्थात् करूणा को श्रेष्ठ धन माना गया है और उसे महाविभूति कहा गया है। ऐसा इसलिए कहा गया है; क्योंकि जिसके पास करूणारूपी धन होता है, सारा संसार उसके वश में हो जाता है। उसके विरोधी भी उसके सामने नतमस्तक हो जाते है। इस धन से मनुष्य में अहंकार नहीं, बल्कि विनम्रता आती है। बुद्ध ने करूणा से सारे संसार को अपना अनुयायी बना लिया था। भौतिक संपत्ति अर्थात् रूपये पैसे को कवि ने तुच्छ माना है; क्योंकि यह अस्थायी होता है। इस धन के कारण मनुष्य के मन में अंहकार उत्पन्न होता है, जो पाप का मूल है। इस धन को अर्जित करने, व्यय करने तथा सुरक्षित करने में कष्ट का अनुभव होता है। करूणारूपी धन सुख शांति प्रदान करने वाला होता है। यही कारण है कि बुद्ध ने राजवैभव त्यागकर करूणा को धारण किया।

3. (क) हरिहर काका का अपने परिवार के सदस्यों से मोहभंग तब हुआ, जब उनके भाइयों की पत्नियों, बहुओं और बच्चों द्वारा उन्हें उपेक्षित किया जाने लगा। बीमारी के समय में भी उन्हें अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए स्वयं ही उठना पड़ता था, जिसके कारण हरिहर काका का उन लोगों से मोह-भंग हो गया, जो सर्वथा उचित है, क्योंकि यदि उनके भाइयों के परिवार के सदस्य उनकी बीमारी में भी देखभाल नहीं कर सकते, तो फिर ऐसे परिवार का क्या लाभ!

(ख) प्रस्तुत पाठ में शिक्षा का परम्परावादी रूप दिखाई पड़ता है, किंतु आधुनिक समय में विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों के विकास हेतु शिक्षा व्यवस्था को प्रयोगवादी बनाए जाने की आवश्यकता है। इसमें शिक्षा बाल केंद्रित होती है। इस पद्धति में अनुशासन, बनाए रखने के लिए शारीरिक दंड का प्रयोग नहीं किया जाता तथा विद्यार्थियों को महान व्यक्तित्व वाले व्यक्ति से परिचित कराया जाता है, जिससे प्रेरित होकर वह स्वयं के व्यक्तित्व को विकसित करने का प्रयास करता है।

प्रस्तुत पाठ में हेडमास्टर शर्मा जी मार्गदर्शक के रूप में तो दिखाई पड़ते है, किंतु वही दूसरी और प्रीतमचंद सर का शारीरिक दंड के रूप में कठोर व्यवहार भी देखने को मिलता है। आज परंपरावादी शिक्षा प्रणाली के स्थान पर प्रयोगवादी शिक्षा अपनाए जाने की आवश्यकता है।

(ग) इफ़्फ़न को अपनी दादी से बड़ा प्यार था। उसे अपने पिता, बहन, माता तथा छोटी बहन नुजहत से भी लगाव था, किंतु दादी में तो जैसे उसके प्राण बसते थे। घर के अन्य सदस्य उसे कभी-कभार डाँटते-डपटते या फिर पिटाई भी कर डालते। छोटी बहन भी उसको बहुत कुछ सुनाया करती थीं। उसे दादी की ग्रामीण बोली बड़ी अच्छी लगती थी। इफ़्फ़न भी अपनी दादी की तरह बोलना चाहता था, पर उसके अब्बू उसे नहीं बोलने देते थे। दादी के प्रति उसका प्रेम पारिवारिक परिस्थितियों तथा उसकी उसकी भावुकता के कारण विकसित हुआ था।

4. (अ) मनुष्य वीर, साहसी, कर्मशील और बुद्धिमान प्राणी है। इसलिए मनुष्य को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति कहते हैं। मनुष्य के पास सोचने-समझने की क्षमता है। कल्पना, दृढ़ता और भावना के लिए मन और आत्मा है, जो सुख-दुख के क्षणिक भावों से ऊपर उठकर मस्ती में लीन हो जाती है। मनुष्य का अगर मन भटकता है तो उसका विवेक उसे सही राह दिखाता है। इसी विवेक के बल पर मनुष्य अपने विश्वास को टूटने नहीं देता है। विकट परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिसको ईश्वर ने इतने गुणों से लिप्त कर रखा हैं, उसे तो कभी अपने मन को निराश होने ही नहीं देता चाहिए। अगर कर्म करने पर भी सफलता नहीं मिली या मन के अनुसार फल नहीं मिला या जो आप चाहते थे वह नहीं मिला तो भी निराश नहीं होना चाहिए। आशावान व्यक्ति के आगे तो भाग्य भी घुटने टेक देता है। हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति तब ही कर सकते हैं जब अपने मन में निराशा उत्पन्न न होने दें। अत: किसी कारणवश सफलता प्राप्त नहीं हो पाई तो कोई बात नहीं। आशा के साथ अपना कर्म करते रहो, अंत में सफलता अवश्य मिलेगी।

(ब) अनुशासन का अर्थ है- नियमों में बँधकर चलना अथवा नियमों द्वारा नियंत्रण। अनुशासन से जीवन में संयम आता है, संयम से आत्मनिष्ठा और सही आत्मनिष्ठा उन्नति का मार्ग भी प्रशस्त करती है। अत: विद्यार्थियों के जीवन में अनुशासन का होना अति आवश्यक है। शिक्षा और अनुशासन एक-दूसरे के पर्याय हैं। विद्यार्थी काल में बालक ज्ञान की प्राप्ति के लिए विद्यालय जाता है। विद्यालय में उसे शिक्षा देने के साथ-साथ अनुशासन भी सिखाया जाता है। जब प्रकृति अनुशासन के नियमों में आबद्ध है, तो मानव के लिए तो इसकी आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। जहाँ कहीं भी अनुशासन का अभाव रहता है चाहे वह विद्यालय हो, घर हो, राष्ट्र हो या कोई अन्य जगह हो, वे अधिक समय तक अपना अस्तित्व कायम नहीं रख सकते। विद्यार्थी के विद्या ग्रहण करने के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने, नियमितता और व्यवस्था बनाए रखने के लिए निर्धारित नियमों का पालन करना जरूरी है। विद्यार्थी लक्ष्यहीन एवं आदर्शहीन हो रहे हैं। शिक्षकों के प्रति अनादर की भावना, महिलाओं के साथ छेड़-छाड़ करना आदि दोष विद्यार्थियों के अंदर क्यों पनप रहे हैं? इसका मुख कारण है- अनुशासनहीनता अर्थात अनुशासन का अभाव। आज विद्यालयों में अनुशासनहीनता ने एक भयंकर समस्या का रूप लिया है। अनुशानहीनता को बढ़ावा देने में सामाजिक परिवेश भी उत्तरदायी है। शिक्षा को नौकरी प्राप्ति का साधन माना जाता है और जब शिक्षा प्राप्त कर लेने पर भी नौकरी नहीं मिलती, तो छात्र अनुशासन को अस्वीकार कर, विध्वंसक बन जाता है। विद्यालयों की प्रशासनिक शिथिलता अनुशासनहीनता को बढ़ावा देती है। शिक्षकों और माता-पिता में अनुशासन का अभाव भी विद्यार्थियों को अनुशासनहीन बनाता है, क्योंकि अनुशासन भाषण से नहीं आचरण से आता है। विद्यार्थियों में बढ़ती अनुशासनहीनता को दूर करने के लिए अनेक प्रयास करने चाहिए। स्कूल एवं कॉलेज के जीवन में राजनीति के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाना चाहिए। शिक्षा को मानसिक, सामाजिक, शारीरिक और चारित्रिक विकास का साधन बनाने आदि के प्रयास करने चाहिए।

(स) मजहब यानी धर्म एवं जाति, सभी ने इन्हें अपने ग्रंथों में बड़ा पवित्र माना है और उच्च महत्त्व दिया है। इसे नस्ल, वंश और रक्त की पवित्रता का अनवरत प्रवाह भी स्वीकार किया है। इसका संबंध उतना बाह्य आचार-व्यवहार से नहीं माना है, जितना कि आंतरिक सूक्ष्म प्रक्रियाओं, आत्मा एवं मन से माना है। मजहब, जाति और धर्म कट्टरता का आवरण पहनकर भीतर से बाहर आ जाया करता है अर्थात बाह्याचार व्यवहार बनकर अपनी श्रेष्ठता का प्रतिपादन और दूसरों के प्रति हेयता का प्रचार -प्रसार करने लगता है, तभी वह दंगे-फ़साद आदि का कारण बन जाता है। सारे धर्म, मजहब, जातियाँ आदि ये सब बस अलग-अलग रास्ते ही हैं, अन्य कुछ नहीं। इनमें से किसी का भी उच्चतम मान्य ग्रंथ ईश्वर-अल्लाह के नाम पर आपस में बैर-विरोध रखना या लड़ना-झगड़ना नहीं सिखाता। वह तो मात्र सत्य की पहचान, प्रेम और भाईचारे की मानवीयता की शिक्षा देता हैं। कोई मजहब या धर्म जिस पावन धरती पर फलता-फूलता और पनपता है, उस देश और धरती का मूल्य एवं महत्व सबसे पहले माना करता है। उस देश और धरती के सुरक्षित बने रहने पर ही वह मजहब, धर्म या जाति का बना रह सकता है। फिर कोई भी मजहब यह नहीं सिखाता कि आपस में एक दूसरे का सिर भी फोड़ों और देश या राष्ट्र को भी तोड़ो। इस प्रकार की तोड़-फोड़ की शिक्षा या प्रेरणा देने वाले तत्व वास्तव में महजबी एवं धार्मिक तो कभी नहीं हुआ करते, निश्चय ही स्वार्थी तत्व हुआ करते हैं।

5. परीक्षा भवन,

दिल्ली।

दिनांक 27 फरवरी, 200XX

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी,

दिल्ली नगर निगम,

नई दिल्ली।

विषय पेयजल की समस्या के संबंध में।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान पूर्वी दिल्ली में पेयजल की समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। पूर्वी दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में पेयजल का अभाव होने के कारण सार्वजनिक नलों तथा पेयजल वाहनों के निकट भारी भीड़ जमा हो रही है। इस कारण सुबह के समय मात्र एक घंटे के लिए पानी का आना है। ऊपरी मंजिल पर पानी नहीं पहुँचने से समस्या और अधिक बढ़ गई है। सुबह के समय आने वाला पानी भी गंदा तथ अशुद्ध होता है।

अत: आपसे अनुरोध है कि शीघ्र स्थिति का मूल्यांकन करें और पेयजल की समस्या से निपटने के लिए आवश्यक कदम उठाएँ।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

अथवा

परीक्षा भवन

मेरठ।

दिनांक 11 फरवरी, 20XX

सेवा में,

कक्षा अध्यापक महोदय,

केंद्रीय विद्यालय, मेरठ

विषय कक्षा में अनुशासहीनता एवं अभद्र व्यहवार हेतु क्षमा याचना पत्र।

माननीय गुरूजी,

यह सत्य है कि कल विद्यालय में भोजनवाकाश के तुरंत बाद वाली कक्षा में हमारी कक्षा ने अत्यंत शोर तथा दुर्व्यवहार से अनुशासनहीनता का परिचय दिया। कुछ विद्यार्थियों ने पंखे व खिड़की इत्यादि को क्षतिग्रस्त करने का प्रयास किया। मैं छात्रनायक (मॉनीटर) होने के नाते अपराध स्वीकार करता हूँ। हमारा विद्यालय अनुशासन प्रिय है, इसी कारण हमं अपने इस कृत्य पर अत्यंत खेद हैं हमारे इस कृत्य के कारण प्रधानाचार्य तक को कष्ट पहुँचा, इसके लिए हम अत्यंत लज्जित हैं। हम आप को आश्वासन देते हैं कि भविष्य में कदापि इस प्रकार की शिकायत का अवसर पुन: नहीं देंगे। हम आपसे तथा प्रधानाचार्य से पुन: याचना करते हैं कि हमें क्षमा कर दिया जाए। हम आपकी इस कृपा दृष्टि के लिए अत्यंत आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद

प्रार्थी

क.ख.ग.

छात्रनायक, कक्षा X (क)

6. (क)

भगवती मेडीकल स्टोर

15 मई, 20xx **सूचना**

अवकाश-दिवस

आप सभी क्षेत्रवासियों को सूचित किया जाता है कि अब से हमारी दवाई की दुकान 'भगवती मेडिकल स्टोर' रविवार के बदले सोमवार के दिन बंद रहा करेगी।

क, ख, ग

दवाई विक्रेता-भगवती मेडिकल स्टोर

अथवा

स्वास्थ्य विभाग, दिल्ली

सूचना

10 नवंबर, 20xx **निषेध**

सर्वजनसाधारण को सूचित किया जाता है कि यह सरकारी भू-भाग है। इस भू-भाग पर कूड़ा-कचरा फेंकना सख्त मना है। इस आदेश की अवहेलना करने वाले के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी।

क, ख, ग

स्वास्थ्य अधिकारी

(ख)

कॉरडोवा पब्लिक स्कूल, दिल्ली

15 अक्टूबर, 20xx **सूचना**

नर्सरी कक्षा हेतु दाखिला आरंभ

कॉरडोवा पब्लिक स्कूल में 17 अक्तूबर, 20xx से नर्सरी कक्षा हेतु दाखिला शुरू है। नर्सरी कक्षा में दाखिला के लिए बच्चों की उम्र कम से कम 4 वर्ष होनी अनिवार्य है।

विस्तृत जानकारी के लिए विद्यालय के कार्यालय में संपर्क करें।

(डॉ. शिवानी उपाध्याय)

प्रधानाचार्या

अथवा

रोटरी क्लब, हरिद्वार

20 जून, 20xx **सूचना**

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता

रोटरी क्लब द्वारा 25 जून, 20xx को बच्चों की फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में 3 वर्ष से 10 वर्ष से तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं। इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए रानीपुर मोड़ पर स्थित हमारे कार्यालय में अपना नाम दर्ज कराएँ।

क, ख, ग

अध्यक्ष : रोटरी क्लब, हरिद्वार

7. (क)

प्रसाद टूर एवं ट्रैवल्स

भारत के किसी भी कोने में जाना हो, तो 'प्रसाद टूर एवं ट्रैवल्स' को छोड़कर बाकी सब भूल जाएँ

उपलब्ध सुविधाएँ

- हर प्रकार की एसी/नॉन एसी गाड़ियाँ
- घर के सदस्यों जैसा भरोसेमंद ड्राइवर
- किसी भी शहर में होटल, रेस्टोरेंट, धर्मशालाओं आदि की बुकिंग
- धार्मिक, ऐतिहासिक स्थलों की सैर सबसे कम रेट पर

संपर्क करें – 'प्रसाद टूर एवं ट्रैवल्स' fnYyh Qku u- 75522996××

अथवा

झंकार नृत्य संस्थान

इन गर्मियों की छुट्टियों में कुछ नया करें, आइए और क्लासिकल 'कत्थक नृत्य' सीखें।
आइए और अपनी गर्मियों की छुट्टियों का सदुपयोग कीजिए

मुख्य विशेषताएँ

⇒ अनुभवी शिक्षक
⇒ व्यवस्थित एवं शांतिपूर्ण वातावरण
⇒ उच्च क्वालिटी का साउंड सिस्टम
⇒ कम फीस में उपलब्ध

प्रवेश पहले आओ पहले पाओ

समय — प्रात: 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक
तिथि — 15 मई, 20XX— 15 जून, 20XX

नोट–राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली नृत्य प्रतियोगिताओं में जाने का अवसर

संपर्क करें- 'झंकार नृत्य संस्थान', II फ्लोर, वसंत कुंज, दिल्ली।

(ख)

विद्यार्थियों की पहली पसंद

जी चाहे, बस लिखते ही जाओ...

स्टार नोटबुक्स

स्टार नोटबुक्स की खूबियाँ

- कागज की गुणवत्ता
- पुन: उपयोगी व इकोफ्रेंडली कागज का प्रयोग
- उचित दाम
- सभी आकारों में उपलब्ध

स्टार नोटबुक्स खरीदने के लिए नजदीकी बुक विक्रेता से संपर्क करें।

अथवा

8. **उक्ति का अर्थ** ''मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना'' इस उक्ति का अर्थ यह है कि कोई भी धर्म आपस में भेदभाव करने का पाठ नहीं पढ़ाता।

मानव की उस असीम शक्ति में गहरी आस्था रही है और यह शाश्वत सत्य है कि सभी मानव एक ही ईश्वर की संतानें है। विभिन्न धर्मों से संबंधित होने के कारण सबकी धर्म संबंधी मान्यताएँ अलग अलग है, परन्तु सबका ध्येय एक ही है, उस परमपिता की प्राप्ति और साथ ही श्रेष्ठ कार्यो द्वारा अमन-चैन की प्राप्ति।

इस उक्ति से संबंधित एक कथा प्रस्तुत है

कथा तीन मित्र थे - राम, असलम और गुरमीत। ये सब एक-दूसरे के घर सभी त्यौहारों, उत्सव और विवाह समारोह में सपरिवार सम्मिलित होते थे। उनकी इस एकता से कुछ राजनेता खिन्न थे। वे अपने स्वार्थवश इनमें द्वेष भावना पैदा करने का प्रयास करते और तीनों को उनके धर्म और दंगों से संबंधित बातें बताकर भड़काने की कोशिश करते। ये तीनों थोड़ा विचलित होने लगे। उनका मिलना-जुलना लगभग खत्म हो गया, पर वे द्वेष भावना का शिकार नहीं हुए।

वे एक-दूसरे के धर्म का सम्मान करते थे, क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि धर्म कभी बाँटता नहीं, बल्कि जोड़ता है। धर्म तो मानवीय पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। तभी ईद के दिन, राम और गुरमीत सपरिवार असलम के घर पहुँचते हैं और सबको ईद की मुबारकबाद देते हैं। कुछ दिन पश्चात् दीपावली के अवसर पर असलम भी सपरिवार गुरमीत और राम के घर मुबारकबाद देने आता हैं। तीनों परिवार खुशी-खुशी समय व्यतीत करते हैं तथा मिठाई व पकवानो का आंनद लेते हैं। उपरोक्त घटना ने इस उक्ति को साक्षात् कर दिया।

''मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।''

सीख प्रस्तुत कथा से हमें यह सीख मिलती है कि धर्म के आधार पर भेदभाव करना अनुचित है। अत: हमें सभी धर्मो का आदर करना चाहिए और मिलजुलकर रहना चाहिए।

अथवा

उक्ति का अर्थ ''करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान'' उक्ति का अर्थ है कि निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी सफलता पाता है। कालिदास निरंतर अभ्यास के द्वारा ही उच्चस्तरीय विद्वान् बन पाए, वहीं अर्जुन महान धनुर्धर बने, तो केवल अपने परिश्रम और अभ्यास के बल पर। प्राचीनकाल से ही ऋषि-मुनियों द्वारा हम परिश्रम व अभ्यास के महत्व को देख व समझ सकते हैं। आज के आधुनिक युग में भी परिश्रम और अभ्यास की महत्ता उतनी ही अधिक हैं।

कथा एक बालक था। वह पढ़-लिख नहीं सकता था। उसके सहपाठी उसका मजाक उड़ाते थे। वह बहुत दु:खी था। परेशान होकर वह किसी ज्योतिषी के पास गया। ज्योतिषि ने कहा- ''तुम पढ़ नहीं पाओगे। तुम्हारे हाथ में विद्या की रेखा नहीं है।'' एक दिन रास्ते में जाते हुए उसने कुएँ की जगह पर रस्सी के निशान को देखा। उसने सोचा यदि कठोर पत्थर पर निरंतर रस्सी की रगड़ के निशान पड़ सकते हैं, तो मैं भी निरंतर अभ्यास करके पढ़कर विद्वान् बन सकता हूँ फिर उसने पढ़ाई का अभ्यास किया ओर एक बड़ा विद्वान बन गया।

निरंतर अभ्यास व्यक्ति की कार्यकुशलता को निखारता है। अभ्यास के दौरान कभी-कभी नकारात्मक भाव भी उत्पन्न होते है, परन्तु उसे स्वयं पर हावी नहीं होने देना चाहिए, क्योंकि वह विकास के पथ में बाधा उत्पन्न करते हैं। अभ्यास के दौरान व्यक्ति अपनी बाधाओं का डटकर मुकाबला करता है तथा विषम परिस्थितियों पर नियंत्रण पा लेता है। अभ्यास ही व्यक्ति के कर्त्तव्य के पथ पर ले जाता है एवं सफलता प्राप्त करने में सहायता करता है। कोई भी व्यक्ति सर्वगुण संपन्न नहीं होता, न ही ज्ञान का भंडार लेकर पैदा होता है।

सीख हमें निरन्तर अभ्यास के द्वारा अपने ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। अपनी योग्यता पर विश्वास तो होना चाहिए, किन्तु अतिविश्वासी नहीं होना चाहिए, इसलिए कहा गया हैं

''करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान।''

ALLEN